2 जनवरी 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

यह आत्मा अनन्तसुख जैसे अनन्त गुणों का धनी होकर भी अपरिचय एवं असेवन के कारण रंचमात्र सुख-लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहा है।

- परमभावप्रकाशक नयचक्र,पृष्ठ :210

वर्ष : 29, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जनवरी (प्रथम), 07 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

बैंकॉक में दिग. जैन मंदिर

बैंकॉक (थाईलैण्ड): हमें यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि श्री दि. जैन समाज बैंकॉक द्वारा हाऊस नं. 143/3 के. बिल्डिंग अपार्टमेन्ट के पास, सोई 45, चेरियन क्रंग रोड़, बैंकॉक में एक तीन मंजिला भव्य 1008 महावीर दि. जैन मंदिर का निर्माण हुआ है।

यह थाईलैण्ड में जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए एक नींव का पत्थर है। वेदी और प्रार्थना सभा दूसरी मंजिल पर स्थित है।

अब तक दिगम्बर एवं श्वेताम्बर के सभी कार्यक्रम एक साथ सम्पन्न होते थे। प्रतिमा भी श्वेताम्बर विधि से स्थापित थी; किन्तु वहाँ की दिगम्बर जैन समाज को एक वीतरागी प्रतिमा की जरुरत महसूस हुई और इस मंदिर का निर्माण हुआ।

बैंकॉक में 450 जैन घर हैं, जिसमें 70-80 दिगम्बर परिवार हैं।

5-6 सितम्बर, 06 को यहाँ एक विशाल जुलूस का आयोजन किया गया। मंदिर निर्माण से वहाँ की सम्पूर्ण दि. जैन समाज अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रही है।

ह्न प्रमोद एम. जैन

सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका तैयार

आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित गोम्मटसार ग्रन्थ की पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित ढूंढारी भाषा में रचित सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका टीका, जिसका हिन्दी अनुवाद डॉ. उज्ज्वला शहा, मुम्बई ने किया है; छपकर तैयार है।

यह मात्र अनुवाद ही नहीं है; अपितु इसमें अनेक स्थानों पर गहन विषयों को समझाने हेतु विशेषार्थ भी लिखा गया है। अर्थ संदृष्टि अधिकार में जीवकाण्ड की कठिन गणित को चिन्हों द्वारा सरल किया है; जो अभी लुप्त सा हो गया है।

1100 पृष्ठों में अनुवादित यह कृति दो भागों में छपकर तैयार है। जो भी जिज्ञासु महानुभाव इन दोनों भागों को प्राप्त करना चाहते हैं, वे 125/- रुपये कृति मूल्य एवं 25/-रुपये डाकखर्च - इसप्रकार 150/- रुपये अपने नाम एवं पते सहित निम्न पते पर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं -

ह्न पण्डित दिनेशभाई शाह, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पू.) मुम्बई, फोन-24073581

मस्तकाभिषेक - २००७

धर्मस्थल (कर्ना.) : संवत् 1682 में प्रतिष्ठापित भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा का तृतीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव 28 जनवरी से 2 फरवरी, 07 तक आयोजित किया गया है।

इस अवसर पर 1008 भगवान श्री पार्श्वनाथस्वामी का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव रखा गया है। दिनांक 28 जनवरी को इस महोत्सव का उद्घाटन किया जायेगा। बाद के दिनों में विद्वत् सम्मेलन, विद्वत्सम्मान, कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे।

समस्त कार्यक्रम आचार्यश्री विद्यानन्दजी महाराज के आशीर्वाद से आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज के सान्निध्य में भट्टारक चारुकीर्तिजी श्रवणबेलगोला के मार्गदर्शन एवं श्री डी.वीरेन्द्र हेगडे के नेतृत्व में सम्पन्न होंगे।

सम्पर्क : श्री धर्मस्थल भगवान बाहुबली स्वामी महामस्ताभिषेक महोत्सव कार्यालय
फोन नं. 08256-277144

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

प्रातः 6.35 से 6.40 के मध्य प्रारंभ

आजकल डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का समय प्रातः 6.40 बजे का ही है; फिर भी प्रवचन प्रायः 3-4 मिनिट पहले ही आरंभ हो जाते हैं। अनेक प्रयासों के बाद भी ठीक समय पर प्रवचन प्रारंभ करना संभव नहीं हो पा रहा है। अतः प्रवचन सुननेवालों से निवेदन है कि साधना चैनल 6.35 पर ही चालू कर लें।

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

ज्ञानेश ने कहा और भी सुनो ह्न ''जिन लोगों को पशु–पक्षियों में मुर्गे, तीतर, भैंसे, बकरे, मेंढ़े, सांड और मनुष्यों को लड़ाने–भिड़ाने तथा लड़ते हुए प्राणियों को देखने, उन्हें लड़ने के लिए प्रोत्साहित करने में आनन्द आता है, भले ही वह व्यापारिक दृष्टि से किया जाये अथवा मनोरंजन के लिए किया जाये; वह सब रौद्र ध्यान ही है। इनका फल नरक है। यदि ये सब पाप नहीं होते तो साधु–संत इन सबका त्याग कर आत्मा–परमात्मा का ध्यान क्यों करते ?''

इतना समझाने के बाद टेस्ट लेने हेतु ज्ञानेश ने धनेश से पूछा ह्न ''बताओ ? मार–काट, लड़ाई–भिड़ाई और अश्लील साहित्य पढ़ने में रुचि लेना तथा जासूसी उपन्यास पढ़ना कौन–सा ध्यान है ?''

धनेश ने उत्तर दिया ह्न ''यह सब रौद्रध्यान ही है; क्योंकि रौद्रध्यानियों को ही तो इसप्रकार के कार्यों में आनन्द आता है।''

ज्ञानेश ने पूछा ह्न ''बताओ धनेश! तुम प्रतिदिन प्रात: जो न्यूज पेपर पढ़कर चुनावों की हार–जीत पर रुष्ट–तुष्ट होते हो, हर्ष–विषाद करते हो, वह कौन–सा ध्यान है ?''

धनेश ने कहा ह्न ''हर्ष में रौद्र व विषाद में आर्तध्यान होता है।''

धनेश के उत्तर पर संतोष प्रगट करते हुए ज्ञानेश ने आगे कहा ह्न ''जैसी करनी वैसी भरनी की उक्ति के अनुसार ऐसे हिंसानंदी रौद्रध्यानियों को इन परिणामों के फल में नियम से नरकगति मिलती है। जहाँ वे लम्बे काल तक लड़ते–भिड़ते रहेंगे तथा अन्य नारकी इनके देह के तिल के बराबर छोटे–छोटे टुकड़े करेंगे, जिससे इन्हें मरणान्तक पीड़ा तो होगी, पर मरेंगे नहीं।

जो आजीविका के लिए हिंसोत्पादक व्यवसाय, उद्योग–धंधे करके अधिक धन अर्जित कर प्रसन्न होते हैं, वे भी हिंसानन्दी रौद्रध्यानी ही हैं। मद्य–मांस–मधु, नशीली वस्तुओं का व्यापार आदि ऐसी अनेक चीजें हैं, जिनमें अनन्त जीव राशि की हिंसा अनिवार्य है। अधिक कमाई के प्रलोभन में पड़कर ऐसे निकृष्ट धंधों को करके खुश होना हिंसानंदी रौद्रध्यान है, जिसका फल नरक है। अत: हमें वही आजीविका चुननी है जिसके साधनों में शुद्धि हो, अधिक हिंसा न हो। शत–प्रतिशत हिंसा का बचाव करने पर भी उद्योगों में आटे में नमक के बराबर हिंसा, झूठ आदि पापाचरण तो फिर भी होगा ही; परन्तु यदि कोई बुद्धिपूर्वक पापाचरण करे तब तो वह पापी ही नहीं महापापी है।

ध्यान रहे, सब अपनी–अपनी ही समीक्षा व समालोचना करें, दूसरों की टीका टिप्पणी करना बन्द करें, दूसरों का सन्मार्ग दर्शन करने के लिए तो पुराण ही पर्याप्त हैं।

चौर्यानन्दी रौद्रध्यान की सीमा में न केवल डाकू और चोर ही आते हैं, बल्कि वे सभी व्यापारी भी आते हैं जो अधिक पैसा कमाने के प्रलोभन में सोने–चाँदी, हीरे–जवाहरात की तस्करी कर तथा कर–चोरी करके उसकी सफलता पर प्रसन्न होते हैं।

इसके सिवाय विषय सामग्री का संकलन करके, चेतन (नौकर–चाकर)– अचेतन (भोग सामग्री) परिग्रह का संग्रह करके, आवश्यकता से अधिक भोगोपभोग सामग्री का संग्रह करके; उसके दर्शन और प्रदर्शन में उत्साहित होना विषयानन्दी या परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान है।

ह्न ह्न ह्न

अज्ञान अन्धकार में पड़े सभी श्रोताओं के लिए ज्ञानेश सम्यग्ज्ञान सूर्य साबित हो रहा था। आज उसने जो–जो आर्त–रौद्र ध्यान पर प्रकाश डाला था; उस प्रकाशपुंज से श्रोताओं के हृदय कमल की कली–कली खिल उठी थी। सभी श्रोता प्रवचन की विषयवस्तु पर विचार करने के लिए विवश थे।

घरों की ओर जाते हुए रास्ते में जहाँ देखो वहीं झुण्डों में खड़े लोग प्रवचन में चर्चित विषय की ही चर्चा करते दिखाई दे रहे थे।

अपने समूह में खड़ा एक कह रहा था ह्न ''देखो ! हम अपना मनोविनोद करने के लिए किसी भी व्यक्ति को अपने वचन बाण का लक्ष्य बनाकर उसकी मजाक उड़ाया करते हैं, किसी की टीका–टिप्पणी किया करते, किसी को बुरी आदतों के लिए कोसते रहे। चाहे जिसको अपनी चर्चा का विषय बनाकर उसकी बुराई–भलाई किया करते और ऐसा करके खुश होते रहते। अभी तक हमने ये सोचा नहीं कि इनसे भी पापबंध होता है। अन्यथा हम ऐसा क्यों करते ? अब हम संकल्प करते हैं कि एक–एक बात सोच–समझकर किया करेंगे, ताकि कम से कम व्यर्थ के पाप से तो बचे रहें।''

समूह में खड़े सभी लोग उसकी बातें ध्यान से सुन रहे थे और सिर हिलाकर स्वीकार कर रहे थे कि तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो।''

इसतरह ज्ञानेश की धर्मामृत वर्षा से भीगे सभी श्रोताओं ने इन पाप भावों से बचे रहने का मन में दृढ़ संकल्प कर लिया।

हृदयतंत्री को झंकृत कर देनेवाले पापभावरूप आर्तध्यान एवं रौद्रध्यान पर हुए ज्ञानेश के प्रवचनों ने श्रोताओं पर तो अमिट छाप छोड़ी ही, मेरे और मुझ जैसे अनेक नास्तिकों के हृदयों को भी हिला दिया है। अनेकों व्यक्तियों ने अहिंसा का मार्ग अपना लिया है, व्यापार में अन्याय–अनीति और शोषण की प्रवृत्ति से और हिंसाजनक खान–पान एवं अभक्ष्य–भक्षण से मुख मोड़ लिया है।

ज्ञानेश के निमित्त से इतना बड़ा परिवर्तन ! निश्चय ही यह एक चमत्कारिक काम है। इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाये, कम है।

धनेश मन ही मन सोचता है ह्न ''यह सब यों ही अंधभक्ति से नहीं

हो रहा है। ज्ञानेश धर्म का मर्म खोलने और धर्म संबंधी मिथ्या मान्यता के भ्रम को मेटने में माहिर भी है। यद्यपि मेरी बुद्धि में अभी तक उसकी ये आध्यात्मिक बातें पूरी तरह बैठ नहीं पाईं, पर यह मेरी ही कमजोरी है, जिसे मुझे स्वयं दूर करना होगा।

जब ज्ञानेश ने चौबीसों घण्टे हो रहे आर्त–रौद्र परिणामों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया तो अधिकांश लोगों के तो रोंगटे खड़े हो गये।

एक ने कहा ह्न ''हमने तो यह सोचा ही नहीं कि **न्यूजपेपर पढ़ने में भी पाप होता है, रोने–बिलखने में, प्रलाप करने में भी कोई पाप होता है।** यह तो अब पता चला कि इस तरह विषयों में आनन्द मानने या रोने–धोने, हर्ष–विषाद करने से जो परिणाम संक्लेशमय होते हैं, वही परिग्रहानन्दी या विषयानन्दी रौद्रध्यान है, जिसका फल दुःख है।

दूसरा बोला ह्न ''अब क्या करें ? कैसे बचें इन पाप भावों से? अबतक पता नहीं था, सो अनजाने में जो हुआ वह तो ठीक पर अब तो जानबूझकर मक्खी नहीं निगली जा सकती।''

वैसे तो थोड़े–बहुत सभी प्रभावित थे; पर उद्योगपति सेठ लक्ष्मीलाल, भूतपूर्व जागीरदार मोहन, पढ़ा–लिखा एम.बी.ए. धनेश और ब्रह्मचारी लाभानन्द विशेष प्रभाव में थे। आज वे सात बजे के बजाय पौने सात बजे ही ज्ञानगोष्ठी के कार्यक्रम में आ बैठे थे। सभी मौन और चिंतन की मुद्रा में बैठे थे। ऐसा लगता था, मानो ये लोग कल के रौद्रध्यान पर हुए प्रवचन से आतंकित होकर सोच रहे हैं कि गुरुजी के बताये अनुसार तो हममें ऐसा एक भी नहीं है, जिसे किसी न किसी रूप में यह खोटा रौद्रध्यान न होता हो।

कुछ उद्योग–धंधों से जुड़े हैं तो कुछ मनोरंजन से जुड़े हैं। ऐसे भी हैं जो अपनी आदतों से मजबूर होकर बिना प्रयोजन ही रौद्रध्यान करते हैं।

सेठ लक्ष्मीलाल गोष्ठी में चिंतन मुद्रा में बैठे–बैठे कल के प्रवचन के बारे में सोच रहे थे ह्न ''ज्ञानेश ने मेरी तो आँखे ही खोल दी हैं। मैं तो ऐसा विषयान्ध रहा हूँ कि भोगोपभोग–सामग्री को अर्जित करने और उसका उपभोग करने के सिवाय मुझे और कुछ दीखता ही नहीं था। दिन–रात इसी एक ही उधेड़बुन में लगा रहा कि न्याय–अन्याय से, झूठ–सच बोलकर ह्न जैसे भी संभव हो, अधिक से अधिक धन संग्रह करना और यश कमाने व सुख–सुविधायें जुटाने में खर्च करना। इसके लिए तस्करी करनी पड़ी तो उसमें भी मैं पीछे नहीं रहा। हिंसा का सहारा भी मैंने लिया।

इसप्रकार मैंने तो सबसे अधिक पाँचों पापों में आनन्द मानने रूप हिंसानन्दी, मृषानन्दी, चौर्यानन्दी एवं परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान ही किया है। अब मेरा क्या होगा ? कैसे छुटकारा मिलेगा इन पापों से ?''

इसी बीच ज्ञानेश ने सेठ लक्ष्मीलाल का ध्यान भंग करते हुए कहा ह्न ''कहो सेठ ! क्या सोच रहे हो ? कल की बात समझ में आई।''

सेठ लक्ष्मीलाल ज्ञानेश के मुख से अपना नाम सुनकर पहले तो सकपका गया फिर माथे का पसींना पोंछते हुए हाथ जोड़कर बोला ह्न ''गुरुजी ! आप बिल्कुल सत्य फरमाते हैं। मैं बैठा–बैठा यही सोच रहा था। आप तो ब्रह्मज्ञानी से लगते हैं। आपने मेरे मनोगत भावों को कैसे पहचान लिया ? कल के प्रवचन में तो आपने मेरे ही सारे पापों को हथैली पर रखे आँवले की भाँति उजागर करके मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है। मुझे ऐसा लग रहा था मानो मेरे लिए ही आपका पूरा प्रवचन हो रहा हो। अब आप मुझे इनसे बचने का भी कोई उपाय अवश्य बताइए। इसके लिए मैं आपका चिर–ऋणी रहूँगा।''

सेठ लक्ष्मीलाल की बात सुनकर मोहन में भी हिम्मत आ गई थी। उसने सोचा ह्न ''मैं भी क्यों न अपनी भूल को मेटने के लिए, अपने पापों का प्रायाश्चित्त करने के लिए ज्ञानेश के सामने अपने पेट का पाप कहकर हल्का हो जाऊँ? क्यों न अपने मन का बोझ कम कर लूँ?

अबतक जो भाव हुए हैं, सो तो हुए ही हैं। इन्हें छिपाये रखने का भाव भी तो एक अपराध ही है और फिर माता–पिता और गुरुजनों से तो कभी कुछ भी नहीं छिपाना चाहिए।''

यह विचार कर मोहन ने कहा ह्न ''मैं तो आपके उपकार से कृतार्थ ही हो गया हूँ। मुझे बचपन में शिकार खेलने का बहुत शौक था। क्या बताऊँ गुरुजी ? मैं थोड़े ही समय में ऐसा निशानेबाज बन गया था कि मुझसे एक भी निशाना नहीं चूका होगा। न जाने कितने मूक प्राणियों के प्राण लिए होंगे मैंने। मैं सचमुच बड़ा पापी हूँ।

घुड़सवारी तो ऐसी करता था कि घोड़ा भले ही दौड़ता–दौड़ता फैन डालने लगे, गिरे, पड़े या मरे ह्न इसकी परवाह किए बिना मैं घण्टों घोड़े को दौड़ाता ही रहता। उसमें मुझे बहुत आनन्द आता था।

पशु–पक्षी लड़ाने में भी मुझे भारी मजा आता। भले ही चोंचे लड़ाते समय, माथे से माथा भिड़ाते समय, उनकी हड्डियाँ टूट जायें, मरणासन्न हो जायें; तो भी मैं उनकी परवाह किए बिना ही अपना भरपूर मनोरंजन किया करता। इसीतरह और क्या–क्या कहूँ? आपके सामने कहने में शर्म आती है; पर कहे बिना प्रायाश्चित्त नहीं होगा, मेरा मन हल्का नहीं होगा। अत: कह रहा हूँ।''

''भाई ज्ञानेशजी ! मैं जवानी के जोश में होश खो बैठा था। रूपवती कन्याओं और कुलागंनाओं के शरीर का मनमाने ढंग से शोषण करना और उन्हें रोता–बिलखता छोड़ देना तो मेरे लिए मनोरंजन का कार्य था। जबतक जागीरदारी का प्रभाव रहा; तबतक मैंने ये पाप किये, मैंने यह सोचा है कि यदि इसी स्थिति में मरण हुआ तो नरक में जन्म लेकर अनन्त दुख भोगने का दण्ड भी मेरे लिए कम ही पड़ेगा।

आपने जो कुछ वर्णन किया, उससे मुझे ऐसा लगा; मानो आपने मेरे जीवन में झांक कर ही कहा है। जब आप यह जानते हैं तो इनसे छुटकारा दिलाने का उपाय भी जानते ही होंगे। वह भी बताइये न ! आप प्रायश्चित्तस्वरूप जो भी दण्ड देंगे, वह हमारे सिर माथे होगा। हम आपका यह उपकार कभी नहीं भूलेंगे।'' **(क्रमश:)**

श्री आदिनाथाय नमः ! !! श्री नेि

चैतन्यधाम की पावन धरती, बीना नगरी धर्मप्रधान, ग
जैन धर्म की दिव्य पताका, देती शान्ति-सुधा संदेश, त

मध्यप्रदेश के बुंदेलखण्ड की प्रसिद्ध आध्यात्मिक
श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं श्

श्री १००८ नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब

(गुरुवार, दिनांक 25 जन

महोत्सव स्थल : शौरी

पावन सान्निध्य
मुनिश्री 108 निर्वाणसागरजी महाराज

प्रतिष्ठाचार्य एवं निर्देशक
बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद

सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य
ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा
पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर
पण्डित मधुकरजी जैन, जलगाँव
पण्डित ऋषभजी शास्त्री, छिंदवाड़ा

निवेदक : श्री 1008 नेमिनाथ दिग. जिनबिम्ब पंचकल्या

अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	उपाध्यक्ष	स्वा
डॉ. अमृतलाल मोदी	अनिल जैन (डी.के)	पण्डित गुलाबचंद जैन	संजय
07580-223363	09425096339	07580-224127	0942

सम्पर्क-सूत्र : श्री महावीर दिग. जिन मंदिर, चैत

फोन : 07580-221701, 09827805282, 099

मिनाथाय नम: !! श्री महावीराय नम: !!

ूंज उठा है डगर–डगर में, नये जिनालय का गुणगान।
तीर्थंकर के पंचकल्याणक करते जीव स्वयं कल्याण।।

क नगरी ''बीना'' में नवनिर्मित ''चैतन्य धाम'' में
श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बीना के संयुक्त तत्त्वावधान में

ा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

वरी से बुधवार, दिनांक 31 जनवरी, 2007 तक)

पुर नगरी, चैतन्यधाम परिसर, सागर गेट, बीना

❖ मांगलिक कार्यक्रम ❖

गुरुवार, 25 जनवरी – धर्म ध्वजारोहण
शुक्रवार, 26 जनवरी – गर्भकल्याणक के छः माह पूर्व
शनिवार, 27 जनवरी – गर्भकल्याणक
रविवार, 28 जनवरी – जन्मकल्याणक
सोमवार, 29 जनवरी – दीक्षाकल्याणक
मंगलवार, 30 जनवरी – केवलज्ञानकल्याणक
बुधवार, 31 जनवरी – मोक्षकल्याणक

❖ विद्वत्समागम ❖

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित विमलचन्दजी झांझरी, उज्जैन
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर
ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना
ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना
पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली

णक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, **बीना जि. सागर (म.प्र.)**

गताध्यक्ष	**महामंत्री**	**कोषाध्यक्ष**	**संयोजक**
जैन (बाटा)	**वीरेन्द्र कठरया**	**कमलचंद जैन (बाटा)**	**वीरेन्द्रराज जैन**
25453121	09425029709	07580–200164	09425722050

न्य धाम, सागर गेट, बीना, जिला–सागर **(म.प्र.)**

926293947, 09229468261, 09425453348

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 66

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

अब भगवान कुन्दकुन्दाचार्यदेव शिष्यजन को शास्त्र के फल के साथ जोड़ते हुए शास्त्र समाप्त करते हैं ह्न

बुज्झदि सासणमेयं सागारणगारचरियया जुत्तो।
जो सो पवयणसारं लहुणा कालेण पप्पोदि।।२७५।।

(हरिगीत)

जो श्रमण–श्रावक जानते जिनवचन के इस सार को।
वे प्राप्त करते शीघ्र ही निज आत्मा के सार को।।२७५।।

जो साकार–अनाकार चर्या से युक्त वर्तता हुआ इस उपदेश को जानता है, वह अल्पकाल में ही प्रवचन के सार को (भगवान आत्मा को) पाता है।

आचार्यदेव कहते हैं कि आत्मा जिन दर्शन और ज्ञान उपयोग से जाना जाता है; उन दर्शन और ज्ञान उपयोग से जो मेरी बात समझेगा, वह भगवान की वाणी अर्थात् दिव्यध्वनि के सार को प्राप्त होगा।

इसी संदर्भ में इस गाथा की टीका भी द्रष्टव्य है –

''सुविशुद्ध ज्ञानदर्शन मात्र स्वरूप में अवस्थित परिणति में लगा होने से साकार–अनाकार चर्या से युक्त वर्तता हुआ, जो शिष्यवर्ग स्वयं समस्त शास्त्रों के अर्थों के विस्तार–संक्षेपात्मक श्रुतज्ञानोपयोगपूर्वक प्रभाव द्वारा केवल आत्मा को अनुभवता हुआ, इस उपदेश को जानता है; वह वास्तव में भूतार्थस्वसंबंध दिव्य ज्ञानानन्द जिसका स्वभाव है, पूर्वकाल में कभी जिसका अनुभव नहीं किया, ऐसे भगवान आत्मा को प्राप्त करता है ह्न जो कि (जो आत्मा) तीनों काल के निरवधि प्रवाह में स्थायी होने से सकल पदार्थों के समूहात्मक प्रवचन का सारभूत है।''

इसप्रकार यहाँ पर प्रवचनसार ग्रंथ की मूल गाथाएँ समाप्त होती हैं। इसके बाद आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने तत्त्वप्रदीपिका टीका के परिशिष्ट में 47 नयों की चर्चा की है तथा बाद में आचार्यदेव ने कुछ श्लोकों और गद्य के माध्यम से इस प्रवचनसार नामक ग्रंथ के सार को बताया है। परिशिष्ट में आचार्य अमृतचन्द्र शिष्य की ओर से शंका उठाते हुए कहते हैं ह्न

''ननु कोऽयमात्मा कथं चावाप्यत इति चेत्, अभिहितमेतत् पुनरप्यभिधीयते। ह्न 'यह आत्मा कौन है (कैसा है) और कैसे प्राप्त किया जाता है' ह्न ऐसा प्रश्न किया जाय तो इसका उत्तर पहले ही कहा जा चुका है और यहाँ पुन: कहते हैं।''

यह परिशिष्ट की प्रथम पंक्ति है; जिसमें शिष्य शंका करते हुए पूछ रहा है कि यह आत्मा कौन है तथा इसको कैसे प्राप्त किया जा सकता है? आचार्यदेव इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि अरे भाई! इसके पहले समग्र प्रवचनसार में हमने इसी आत्मा को ही तो बताया है; लेकिन फिर भी तुम्हारी जिज्ञासा को देखकर हम इसके बारे में कहते हैं।

प्रवचनसार को समग्ररूप से पढ़ने के बाद यदि कोई यह कहता है कि आत्मा क्या है और कैसे मिलता है ? तो यह वैसे ही है, जैसे कोई रातभर रामायण पढ़े और सुबह यह पूछे कि राक्षस कौन था ह्न राम या रावण ?

प्रवचनसार में समग्ररूप से आत्मा को समझाने के बाद यदि आचार्यदेव पुन: आत्मा के बारे में समझाते हैं तो इसका तात्पर्य यह है कि आचार्यदेव यह बात समझते हैं कि पूछनेवाला शिष्य कोई साधारण शिष्य नहीं है। जिसने पूरा प्रवचनसार पढ़ा हो; उसके बाद यदि वह पूछ रहा है, तो इसमें कुछ गहराई है।

जिस व्यक्ति ने रामायण सुनी हो, उसको पहले यह बताया गया था कि रावण बुरा आदमी था और राम बहुत अच्छे थे; इसलिए रामायण सुनने का लोभ उसे जागृत हुआ; किन्तु जब उसने रामायण सुनी; तब रामायण सुनने से उसे शक हो गया कि राक्षस कौन था, राम या रावण ?

समग्र रामायण सुनने पर उसे शक इसलिए हुआ कि ''रावण तो सीता का अपहरण करके ले गया था तथा उसने सीता को अपने घर बहुत आदर–सत्कार के साथ रखा था एवं सीता को रावण ने हाथ भी नहीं लगाया था तथा रावण उसके आगे हाथ ही जोड़ता रहा; किन्तु जब सीता राम के पास वापस आ गई, तब राम ने सीता को बिना बताये जंगल में पशु–पक्षियों के बीच अकेली छोड़ दिया तथा उस समय सीता गर्भवती थी, राम उसके पति थे तथा गर्भ में राम की ही संतान थी ह्न ऐसी परिस्थिति में उस व्यक्ति को यह बात समझ में नहीं आई कि राक्षस राम था या रावण?

जब लक्ष्मण को शक्ति लग गई, तब राम ने रावण से युद्ध बंद करने के लिए कहा तो रावण ने उसी समय युद्ध बंद कर दिया। इसके बाद अष्टान्हिका पर्व में जब दोनों पक्षों से यह तय हो गया कि हम युद्ध नहीं करेंगे; क्योंकि ये आठ दिन धर्म की आराधना के दिन हैं। तदनन्तर जब रावण भगवान के चैत्यालय में बहुरूपिणी विद्या सिद्ध करने के लिए ध्यान कर रहा था; तब लक्ष्मण आदि ने उसके ध्यान में बहुत विघ्न डाले तथा मायामयी मंदोदरी बनाकर उसकी चोटी पकड़कर रावण के सामने घसीटा तथा रावण से यह भी कहा कि हम तेरी मंदोदरी ले जा रहे हैं। इसप्रकार लक्ष्मणादि ने रावण के धर्मकार्य में विघ्न किये; किन्तु रावण की ओर से किसी ने भी विघ्न नहीं किये। ऐसी स्थिति में पूरी रामायण सुनने पर उस व्यक्ति को शंका हुई; क्योंकि रावण के घर तो सीता सुरक्षित रही; लेकिन राम के घर सुरक्षित नहीं रही। 'सुरक्षित नहीं रही' का तात्पर्य यह है कि राम ने सीता को वनवास दे दिया।

इसलिए जिसप्रकार पूरी रामायण सुनने पर उस व्यक्ति को शक हो गया कि राक्षस कौन था ह्न राम या रावण ? उसीप्रकार समग्र प्रवचनसार पढ़ने के बाद भी शिष्य आत्मा के अन्य धर्मों को भी जानना चाहता है; अत: शिष्य ने यह प्रश्न किया कि आत्मा कौन है तथा कैसे प्राप्त होता है?

एक वैज्ञानिक ने अपने घर में दो बिल्लियाँ पाल रखी थी, उनमें एक छोटी थी और एक बड़ी। जब उस वैज्ञानिक ने अपना मकान बनवाया तो उसने कारीगर से मकान के दरवाजे में दो छेद बनाने के लिए कहा, जिससे बिल्लियाँ आपातकाल में शीघ्रता से बाहर निकल सकें।

उस कारीगर ने दरवाजे में एक बड़ा छेद कर दिया। उस वैज्ञानिक से कहा कि इसमें से दोनों बिल्लियाँ निकल जाएगी। तब वैज्ञानिक ने उस

कारीगर को डाँटा और पूछा कि इसमें से बड़ी बिल्ली तो आराम से निकल जाएगी; लेकिन छोटी बिल्ली कहाँ से निकलेगी, तुमने छोटी बिल्ली के निकलने के लिए दूसरा छेद क्यों नहीं बनाया ? तो कारीगर ने कहा कि इसमें से ही छोटी बिल्ली भी निकल जाएगी और वैज्ञानिक को समझाया कि जिसमें से बड़ी बिल्ली निकल सकती है, उसमें से छोटी क्यों नहीं निकलेगी ? तथा उस कारीगर ने उन दोनों बिल्लियों को निकालकर भी बताया।

तब वैज्ञानिक उससे कहता है मुझे मूर्ख समझते हो, दोनों निकल तो गई; किन्तु एक के बाद दूसरी निकली, आगे–पीछे निकलने में समय लगा न और समय का महत्त्व ज्यादा है, अन्य समय में तो बिल्ली को निकलने की आवश्यकता ही नहीं है; क्योंकि एयरकंडीशन और खाने–पीने की व्यवस्था तो अंदर ही है। यह छेद मैंने आपातकाल के लिए बनवाया है, यदि कभी अंदर आग लग जाए तो बिल्लियों को निकलकर भागने के लिए यह छेद बनवाया है। उस समय एक सैकण्ड की भी कीमत होती है; एक बिल्ली निकलेगी तथा उसके बाद दूसरी बिल्ली निकलेगी, तबतक तो दूसरी बिल्ली बेहोश हो जाएगी, अग्नि से जल जाएगी। इसप्रकार वह वैज्ञानिक बहुत दिमागवाला था; लेकिन लोगों ने उसे मूर्ख घोषित कर दिया कि उनको यह समझ में नहीं आया कि एक छेद में दो बिल्लियाँ निकल सकती हैं।

अरे भाई ! वह वैज्ञानिक समय का महत्त्व समझता था; इसलिए उसने दो छेद बनवाने के लिए कहा था। जो लोग अग्नि पर चलते हैं तथा जलते भी नहीं हैं, उसमें 'समय' का ही वैज्ञानिक कारण है। उसमें नियम यह है कि यदि कोई व्यक्ति इतने समय तक अग्नि पर रहेगा तो नहीं जलेगा; लेकिन इससे ज्यादा समय रहेगा तो जलेगा। मान लें कि एक सैकण्ड तक पैर अग्नि पर रहे तो खाल नहीं जलती है; लेकिन यदि एक सैकण्ड से अधिक देर तक पैर अग्नि पर रहेगा तो खाल जल जाएगी।

जो लोग नाचते हुए अग्नि के ऊपर से निकलते हैं तो वे अपना पैर कम समय तक ही अग्नि पर रखते हैं; फिर उठा लेते हैं, इसलिए उनका पैर नहीं जलता है; किन्तु यदि वे ज्यादा समय तक अपना पैर अग्नि पर रखे रहे तो उनके पैर जल जाएंगे। यदि कोई उन नाचनेवालों को देखकर अग्नि पर खड़ा हो जाय तो वह जल जाएगा; क्योंकि नाचने वाले तो समय से पहले ही पहला पैर उठा लेते हैं तब दूसरा रखते है। यदि अग्नि की लपट पर से जल्दी हाथ निकाल दिया जाय तो हाथ नहीं जलेगा; लेकिन यदि ज्यादा देर तक हाथ रखा जाएगा तो हाथ जल जाएगा। इसीप्रकार उस छेद में से बड़ी बिल्ली तो बच जाएगी; क्योंकि उसे समय मिल जाएगा; लेकिन छोटी बिल्ली नहीं बच पाएगी; क्योंकि उसे उतना समय नहीं मिलेगा।

इसलिए उस वैज्ञानिक ने जो यह पूछा कि दोनों बिल्लियाँ कैसे निकलेगी? यह प्रश्न मूर्खतापूर्ण नहीं है, अपितु इस प्रश्न में गहराई है। आचार्यदेव यह समझते हैं कि हमने अभी शिष्य को आतमा के दो–चार धर्म ही बताए हैं, अनंत नहीं तथा शिष्य आत्मा के अनेक धर्मों को जानना चाहता है। अतएव आचार्यदेव परिशिष्ट में 47 धर्मों के माध्यम से पुन: आत्मा को समझाते हैं। ●

पच्चीसवाँ प्रवचन

प्रवचनसार परमागम के परिशिष्ट पर चर्चा चल रही है। आत्मा के 47 धर्मों को जाननेवाले 47 नयों की चर्चा करते हुए परिशिष्ट में आचार्यदेव कहते हैं ह्न

''यह आत्मा कौन है और कैसे प्राप्त किया जाता है ह्न यदि ऐसा प्रश्न किया जाय तो इसका उत्तर पहले ही कहा जा चुका है और अब पुन: कहते हैं ह्न प्रथम तो, आत्मा वास्तव में चैतन्यसामान्य से व्याप्त अनन्त धर्मों का अधिष्ठाता एक द्रव्य है; क्योंकि उन अनन्त धर्मों में व्याप्त होनेवाले जो अनंत नय हैं; उनमें व्याप्त होनेवाला जो एक श्रुतज्ञान–स्वरूप प्रमाण है, उस प्रमाणपूर्वक स्वानुभव से वह आत्मद्रव्य प्रमेय होता है।''

न तो अनंत धर्म गिनाए जा सकते हैं और न ही अनंत नय बताए जा सकते हैं; क्योंकि वाणी की मर्यादा अनंत को व्यक्त करने में समर्थ नहीं है। अत: आचार्यदेव यहाँ 47 नयों के माध्यम से आत्मा के ४७ विशिष्ट धर्मों को समझाते हैं।

एक बात समझने की यह भी है कि **समयसार के परिशिष्ट में प्रतिपादित** 47 शक्तियाँ तो गुण, धर्म और स्वभावरूप हैं और **प्रवचनसार के परिशिष्ट में प्रतिपादित** 47 नयों के विषय आत्मा के धर्म हैं। नित्यत्व–अनित्यत्व, एकत्व–अनेकत्व आदि जोड़े से रहनेवाले गुणों को धर्म कहते हैं। गुणों की पर्यायें होती हैं और धर्मों की पर्यायें नहीं होतीं।

अब यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है कि आत्मा में ये परस्पर विरोधी प्रतीत होनेवाले धर्म एकसाथ कैसे रह सकते हैं ?

इसी शंका के समाधान के लिए तथा अनेकान्त की सिद्धि के लिए 47 नयों का चयन किया; क्योंकि इन 47 नयों का विषय आत्मा में रहनेवाले ४७ धर्म ही हैं।

द्रव्यार्थिक–पर्यायार्थिक, निश्चय–व्यवहार तथा नैगमादि सात नयों से इन 47 नयों की शैली भिन्न है; क्योंकि द्रव्यार्थिकनय व पर्यायार्थिकनय का विषय समस्त लोक है। ये नय समस्त लोक को द्रव्य और पर्याय दो भागों में विभाजित कर वस्तुस्वरूप प्रस्तुत करते हैं और निश्चय और व्यवहारनय का विषय आत्मा है। ये नय सम्पूर्ण जगत को स्व और पर में विभाजित कर वस्तुस्वरूप स्पष्ट करते हैं।

नय दो प्रकार के होते हैं ह्न एक तो सिद्धान्त के नय तथा दूसरे अध्यात्म के नय। सिद्धान्त के नय वे नय हैं, जो छहों द्रव्यों पर घटित होते हैं तथा अध्यात्म के नय वे नय हैं, जो मात्र आत्मा पर घटित होते हैं। द्रव्यार्थिक व पर्यायार्थिक नयों का विषय क्रमश: द्रव्य और पर्याय हैं तथा निश्चय और व्यवहार नयों के द्वारा अभेद तथा भेद अथवा असंयोग तथा संयोग का ज्ञान कराया जाता है; किन्तु इन 47 नयों में ऐसा कुछ भी नहीं है। इन ४७ नयों में आत्मा के एक–एक धर्म को ग्रहण करनेवाला एक–एक नय है।

यदि समग्र आत्मा को ग्रहण करना हो तो उसको एक धर्म से भी ग्रहण किया जा सकता है;क्योंकि आत्मा एक 'अखण्ड वस्तु' है। **(क्रमश:)**

2 जनवरी 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

बालकों के लिये एक और उपहार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा बाल वर्ग में तत्त्वज्ञान एवं नैतिक संस्कारों के लिये किये जा रहे प्रयासों के अन्तर्गत धार्मिक बालगीत कैसिट '**वीर प्रभु की हम संतान**' (चौथा पुष्प) एवं त्रैमासिक पत्रिका '**चहकती चेतना**' का विमोचन बाँसवाडा में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर किया गया।

पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर द्वारा संपादित इस बालपत्रिका में प्रथमानुयोग की कहानियाँ, वर्ग-पहेली, चित्रकला, प्रश्नोत्तर, बूझो तो जाने, धार्मिक चित्रकथा आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। इसका तीन वर्षीय सदस्यता शुल्क 250/- रुपये रखा गया है। इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर सम्पर्क कर बालगीत कैसेट एवं त्रैमासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं ह्न आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.) 482002

प्रतिभासंपन्न विद्यार्थियों को स्वर्ण अवसर

भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में सम्मिलित होने के इच्छुक विशिष्ट योग्यता सम्पन्न किसी भी जैन विद्यार्थी की संपूर्ण व्यवस्था का दायित्व वहन करने को हम लालायित हैं। राज्यस्तरीय व अन्य प्रशासनिक योग्यता विकास के लिये भी उत्कृष्टता के आधार पर विचार किया जा सकता है।

जैन समाज में अगणित प्रतिभाएँ छिपी हुई हैं। संस्कारवान प्रतिभा से समाज के साथ देश का भविष्य भी उज्ज्वल हो सके इसी भावना से सेवा करने का मानस हो रहा है। इच्छुक विद्यार्थी सम्पर्क करें। **पता :** पी.एस.सुराना सुराना एण्ड सुराना पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट, इंटरनेशनल लॉ सेंटर (हाई कोर्ट के सामने), 224 एन.एस.सी.बोस रोड़, चैन्नई-01 फोन नं.044-25390121, 25381616

निबन्ध, चित्रकला एवं स्लोगन प्रतियोगिता

अलीगढ़: मांसाहार-रहित/विरोधी दिवस के उपलक्ष्य में अहिंसा, संस्कृति एवं जीव-कल्याण समिति (रजि.) द्वारा '**शाकाहार ही स्वास्थ्यप्रद**' विषय पर निबन्ध, चित्रकला एवं स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गई है। प्रविष्टियाँ 15 जनवरी, 07 तक भेजें।

अनिवार्य औपचारिकताएँ : 15 वर्ष व उससे अधिक आयु के लिए मान्य, माध्यम हिन्दी या अंग्रेजी, सीमा 1500 शब्द, एक से अधिक प्रविष्टियाँ स्वीकृत, प्रविष्टि के साथ फोटोयुक्त बॉयोडाटा, शाकाहारी होने की घोषणा, रचना की मौलिकता/स्वयं चित्रण सम्बन्धी घोषणा-पत्र भेजना अनिवार्य, चयनित प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार के साथ प्रमाण-पत्र। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें ह्न अहिंसा, संस्कृति एवं जीव कल्याण समिति, 18 बृज विहार, ए.डी.ए. कालोनी (बन्ना देवी), दिल्ली रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.), फोन नं. 0571-2400148, 09837336938

हार्दिक बधाई

1. श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के स्नातक **श्री रितेशजी शास्त्री डडूका** द्वारा राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित हिन्दी प्राध्यापक परीक्षा में सफलता अर्जित होने पर हार्दिक बधाई !

ज्ञातव्य है कि आप वर्तमान में संस्कृत शिक्षा विभाग के राजकीय संस्कृत विद्यालय नई बस्ती, लोधा, बाँसवाड़ा में प्रधानाध्यापक हैं।

2. श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के स्नातक **श्री स्वप्निल जैन शास्त्री का सौ. नितिशा जैन, नागपुर** के साथ दिनांक 5 दिसम्बर को विवाह सम्पन्न हुआ। आपको जैनपथप्रदर्शक समिति एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई। विवाहोपलक्ष में आपकी ओर से जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान को 200/- रुपये की दानराशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद !

वैराग्य समाचार

1. **पाण्डिचेरी निवासी श्री मेघराज कोठारी** का दिनांक 3 दिसम्बर को देहविलय हो गया है। आप धार्मिकरूचिवाले एवं सरल स्वभावी थे एवं टोडरमल स्मारक भवन लगने वाले शिविरों में ज्ञानार्थ आते रहते थे।

आपकी स्मृति में श्री गजराज राजकुमार कोठारी की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

2. **जयपुर निवासी श्री कपूरचन्द जैन** का दिनांक 1 दिसम्बर को शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्र अनुज शास्त्री के दादाजी थे। आपकी स्मृति में श्रीमती चन्द्रादेवी जैन, जौहरीबाजार की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति को 200/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

विद्वान की आवश्यकता

महाराष्ट्र प्रान्त में तत्त्वप्रचार-प्रसार एवं विधान कराने हेतु अविवाहित युवा विद्वान की आवश्यकता है। मानधन योग्यतानुसार होगा। निम्न पते पर शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें। ह्न विश्वलोचन जैनी, हीराकुटीर, मस्कासाथ, नागपुर-02 फोन: 0712-2762624, 09422146642

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
फैक्स : (0141) 2704127